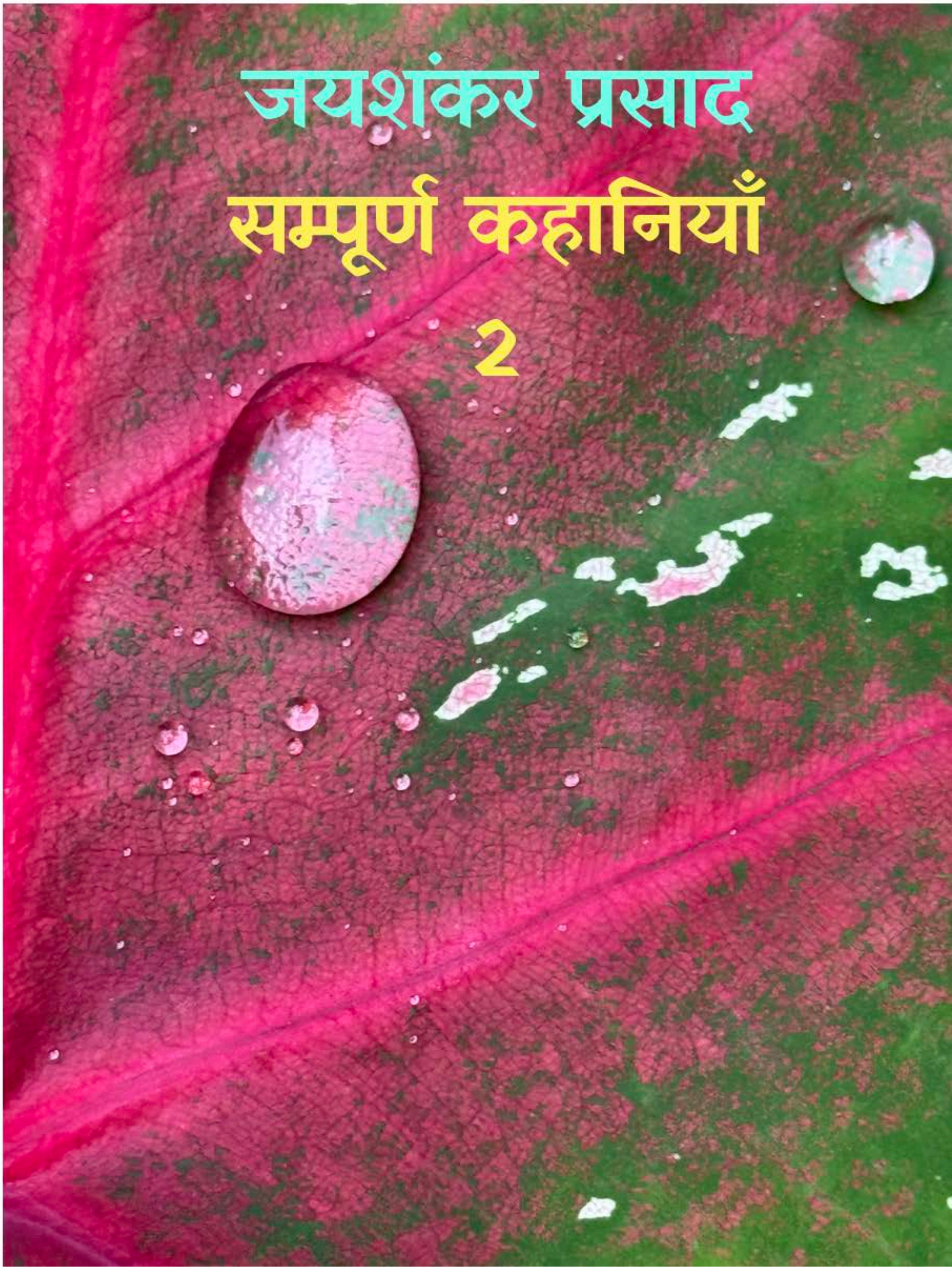
जयशंकर प्रसाद
सम्पूर्ण कहानियाँ
2

जयशंकर प्रसाद सम्पूर्ण कहानियाँ 2

कहानी संग्रह

जयशंकर प्रसाद

अनुक्रम

प्रतिध्वनि	3
कला	10
देवदासी	17
समुद्र-संतरण	33
वैरागी	39
बनजारा	43

प्रतिध्वनि

मनुष्य की चिता जल जाती है, और बुझ भी जाती है, परंतु उसकी छाती की जलन, द्वेष की ज्वाला, संभव है, उसके बाद भी घक्-धक् करती हुई जला करे।

तारा जिस दिन विधवा हुई, जिस समय सब लोग रो-पीट रहे थे, उसकी नंद ने, भाई के मरने पर भी, रोदन के साथ व्यंग के स्वर में कहा--''अरे मैया रे किसका पाप किसे खा गया रे!'' तभी आसन्न वैधव्य ठेलकर, अपने कानों को ऊँचा करके, तारा ने वह तीक्ष्ण व्यंग्य रोदन के कोलाहल में भी सुन लिया था।

तारा सम्पन्न थी, इसलिये वैधव्य उसे दूर ही से डराकर चल जाता। उसका पूर्ण अनुभव वह कभी न कर सकी। हां, नन्द रामा अपनी दरिद्रता के दिन अपनी कन्या श्यामा के साथ किसी तरह काटने लगी। दहेज मिलने की निराशा से कोई ब्याह करने के लिये प्रस्तुत न होता। श्यामा 14 बरस की हो चली। बहुत चेष्टा करके भी रामा उसका ब्याह न कर सका। चल बसी।

श्यामा निस्सहाय अकेली हो गई। पर जीवन के जितने दिन है वे तो कारावासी के समान काटने ही होंगे। वह अकेली ही गंगा-तट पर अपनी बारी से सटे हुए कच्चे झोंपड़े में रहने लगी।

मन्नी नाम की एक बुढ़िया, जिसे 'दादी ' कहती थी, रात को उसके पास सो